से लिया गया है। अर्थात इसका सीधा उद्देश्य लोगों को परिवार के प्रति जागरूक तथा स्नेह-प्रेम का विकाश करना है, जो हमारे सनातन धर्म का भी मुख्य प्रतीक है, तभी तो सनातनीयों के समाज की श्लोगन है - धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो अर्थात यही विश्व की चर्चा महापुराण में वसुधैव को इंगित करता है।

पृथ्वी महाद्वीपों में, महाद्वीप देशों में और देश राज्यों में विभक्त विभक्त है, कहने को यह धरती का विभाजन है और यह आवश्यक भी लगता है, परन्तु प्रत्येक स्तर के विभाजन के साथ ही संवेदना भी बँटी है। आज एक सामान्य व्यक्ति की प्राथमिकता का क्रम परिवार, मोहल्ले से शुरू होता है और उसका अन्त देश या राष्ट्र पर हो जाता है।

देखा जाए तो आधुनिक समय में वसुधैव कुटुम्बकम् ग्रन्थों, पुराणों, तथा महाकाव्यों में वर्णित एक अवधारणा बनकर रह गयी है, वास्तव में कहीं यह अस्तित्व में दृष्टिगोचर नहीं आती है। मूलतः वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा की संकल्पना भारतवर्ष के प्राचिन ऋषि-मुनियों द्वारा की गयी थी। जिसका उद्देश्य था - पृथ्वी पर मानवता का विकाश।

"पृथ्वी पर मानवता का विकाश से आशय है की - पृथ्वी ही विश्व है, और मानवता ही सबसे बड़ा धर्म है, इन्हीं दो का समावेश इस पृथ्वी पर एक बड़े परिवार के रूप में परीलक्षित करतीं हैं।

इसके माध्यम से उन्होनें यह संदेश दिया कि सभी मनुष्य समान हैं, और सभी का कर्तव्य है कि, वे परस्पर एक-दूसरे का विकाश में सहायक बनें, जिससे मानवता (धर्म) का बौद्धिक बौद्धिक स्तर पर विकाश में सहायक हो सके। भारतवासियों ने इसे सहर्ष अपनाया, यही कारण है की रामायण में श्री राम पूरी पृथ्वी को इक्ष्वाकु वंशी राजाओं के अधीन बतातें हैं। रामायण अर्थात = राम + अयन, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है राम के चरित्र का दर्पण।

नोट: सामान्य तौर या आमतौर पर इस विषय "वसुधैव कुटुम्बकम" का मुख्य प्रारूप इतिहास काल में इंगित है, इसका दूसरा प्रारूप यह है कि ये जिवन/जीवन की सरलता को भी परिलक्षीत करता है, ऐसा इसलिए कहा जा रहा है क्योंकि यह आशय जब महापुराणों में इंगित किया गया तब का समयकाल था उस समय के कालान्तर में जीवनशैली काफी हद तक बहुत सरल अथवा सुव्यवस्थित थी। आज के समय में यह विषय-वस्तु की निर्दिष्टता काफी हद तक कम हो गयी है, क्योंकि आज के समय में "समय और अर्थ और जिविका का महत्व/महत्व अग्रण्य है। ऐसा इसलिए